भारतीय संस्कृति को महापुरुषों की देन

युनान,मिश्र,रोमां सब मिट गए जहाँ से,
बाकी मगर है अब तक नामो निशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमा हमारा ।

आज सारे संसार के विचारकों एवं इतिहासकारों के समक्ष एक महान आश्चर्यजनक प्रश्न यह बना हुआ है कि लगातार शताब्दियों तक ऐसे विदेशी शासकों जिन्होंने भारतीय राष्ट्र की लाश पर अपने अनुकूल नए राष्ट्रों को जन्म देने के लिए लोभ-लालच, छल-कपट, बल-बर्बरता आदि अनेक अमानवीय एव घृणित उपायों का अवलम्बन किया तथापि इतनी लम्बी दास्ताँ के पश्चात भी यह राष्ट्र अपनी चेतना, स्वाभिमान तथा जीवन की रक्षा कैसे कर सका ?इसके उत्तर में तो इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आधुनिक भारत में दिखलाई पड़ने वाली सभ्यता एवं संस्कृति को चिरशाश्वत एवं एकरूप बनाए रखने का श्रेय उन सभी महापुरुषों को है जिन्होंने भिन्न-भिन्न समय पर भारत की पुनीत धरा पर जन्म लेकर यहाँ के धर्म, समाज, साहित्य एवं विज्ञान के क्षेत्रों में योगदान देकर इस संस्कृति को समृद्ध किया ।

इन महापुरुषों को जन्म देने का श्रेय किसी विशेष भू-भाग या प्रान्त को नहीं जाता अपितु विशाल भारत के विस्तृत और सम्पूर्ण प्रांगण पर इन महान पुरुषों के चरण चिह्न अंकित हैं जो आज भी मानव को प्रेम, भाईचारे, राष्ट्रभक्ति एवं समाज सेवा का संदेश दे रहे हैं।

जब-जब धर्म की हानि हुई और इस देश को आपदाओं और अभावों से संघर्ष करना पड़ा, अन्याय, अत्याचार, अनीति का बोलबाला होने लगा।

भोली-भाली जनता क्रूर काल के चक्र में पिसने लगी, तब-तब भारत के प्रत्येक राज्य ने किसी न किसी महान आत्मा को जन्म देकर भारत की उज्ज्वल संस्कृति को उज्ज्वलतम बनाने के लिए योगदान दिया। दक्षिण से श्री रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, और वल्लभाचार्य ने भक्ति की रसधारा प्रवाहित की। उधर काशी में स्वामी रामानन्द ने राम भक्ति की मन्दाकिनी प्रवाहित की तो एक ओर महाराष्ट्र में सन्त तुकाराम की भक्ति ने सारे देश को पावन किया। पंजाब ने गुरुनानक, गुरुगोबिन्द सिंह जैसे संतों को जन्म दिया। राजस्थान ने प्रेम दीवानी मीरा को जन्म दिया तो बंगाल ने श्री चैतन्य महाप्रभु जैसे कृष्णावतार को जन्म दिया। ब्रजप्रदेश ने सूरदास जैसे अनूठे कवि को जन्म दिया तो अवध ने तुलसीदास जैसे रामभक्त को जन्म दिया। इसी तरह गुजरात ने स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गाँधी जैसी दिव्य आत्माओं को जन्म दिया।

इस प्रकार महानपुरुषों की महत्ता का विकास भिन्न-भिन्न दिशाओं में हुआ और समय की माँग के अनुसार उन्होंने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में संसार का मार्गदर्शन किया। संसार ने प्रायः उन्हीं को महापुरुष माना है जिनको इतिहास ने अधिक से अधिक पन्ने दिए, परन्तु कितने ही ऐसे महानपुरुष हुए है जो मानवता के इस भव्य प्रसाद के गगन चुम्बी शिखर न बनकर नींव के पत्थर बनकर रह गए। दुनिया उनको जान न सकी। राजनीति में नाम कमाने वाले सम्राटों को इतिहास ने सैंकड़ों पृष्ठ दिए परन्तु इन शासकों की आत्मा पर शासन करने वाले ज्ञात व अज्ञात महानपुरुषों को किसी ने नहीं समझा। सम्राट अशोक महान था पर अत्याचारी और क्रूर अशोक को मानवता का पुजारी और गरीबों का हमदर्द बनाने वाला तो बौद्ध धर्मानुयायी 'उपगुप्त' ही था। चन्द्रगुप्त एक सफल सम्राट था पर इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि तक्षशिला विद्यालय में पढ़ने वाले एक साधारण छात्र को एक प्रतिभाशाली सशक्त सम्राट बनाकर छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त सारे देश को एकता के सूत्र में बाँधने की सामर्थ्य देने वाला तो

चाणक्य ही था, जो स्वयं राजमहलों से दूर रहकर कुटिया में तपस्या और त्याग का जीवन व्यतीत करता था।
मुगलवंश की तीन सौ वर्ष की सुदृढ़ नींव को पच्चीस वर्ष तक युद्ध करके हिला दिया – शिवाजी ने। औरंगजेब जैसे क्रूर, अत्याचारी और फरेबी सम्राट की शक्ति चूर-चूर हो गई, पर मराठा सम्राट शिवाजी की माया का पता तक न चला। जमाने ने शिवाजी का लोहा माना, पर कौन नहीं जानता कि उस शासक के प्राणों में नवचेतना का संचार करने वाली शक्ति का केन्द्र, तपस्या का पुंज और त्याग की मूर्ति कोई और ही था? वे थे समर्थ गुरु रामदास जी, जो संसार की दृष्टि से तो वैरागी व तपस्वी थे परन्तु अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए निरन्तर चिन्तनशील एवं कर्मनिष्ठ थे।

इस प्रकार हम देखते है कि हर सफल मानव के पीछे कोई न कोई शक्ति कार्य करती है। महान शक्तियाँ सदा अदृश्य रहती हैं। वायु अदृश्य है पर उसके वेग को कौन नहीं जानता? अग्नि व विद्युत शक्ति भी अदृश्य है। बड़े-बड़े मंत्रों की शक्ति भी अदृश्य रहती है। यहाँ तक कि हमारे अंदर स्थित आत्मा भी अदृश्य है और अधिक क्या कहा जाए स्वयं इस संसार की उत्पत्ति व संहार करने वाला ईश्वर भी अदृश्य है । इसी प्रकार सच्चे संत, योगी, महानपुरुष भी अदृश्य रहते हैं। जिस यश, कीर्ति, धन, वैभव के पीछे दुनिया पागल रहती है वह उन सबको ठोकर मार देते हैं। वे दुनिया से दूर एकान्त स्थान पर बैठकर अपनी आत्मा का विकास करते हैं। उनकी विचार शक्ति की तरंगें सम्पूर्ण मानव समुदाय को प्रभावित करती हैं। इन्हीं महान आत्माओं के कारण भारत और भारतीय संस्कृति जीवित है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'सुथरामृत' में हमने सुथरा सम्प्रदाय के कुछ संतों का व्यक्तित्व अंकित किया है। इसमें जलज्योतिशाह जी (सुथरेशाह जी) को एक संत फकीर के साथ-साथ एक समाज सुधारक के रूप में भी दर्शाया गया है। वे संसार की दृष्टि में केवल बाबा (साधु) हैं परन्तु संसार उन्हें नहीं जानता, वे

सन्तों में सन्त थे, त्यागियों में त्यागी थे, ब्रह्मचारियों में ब्रह्मचारी थे। वे कर्मों में लीन रहते हुए भी कर्म से विरक्त रहे। सौम्यता और शान्ति उनके मुखमण्डल पर सदैव झलकती रही। इस पुस्तक के द्वारा पाठकगण दिव्य संतों के जीवन से परिचित होंगे ।